https://kalaasamiksha.in/
*Kalaa Samiksha - Volume 01, No 05, PP 91-101(Total PP11)*
*ISSN : 3107- 4936(Online)*
Frequency – Monthly


# A Contemporary Study of Saura Tribal Art of Odisha - Indian Heritage and Global Perspective (ओडिशा की सौरा जनजातीय कला का समकालीन अध्ययन- भारतीय विरासत और वैश्विक दृष्टिकोण)

*Priyanka Singh[a]*, Dr. Meenakshi Thakur[b]*

*[a] Research Scholar, Dayalbagh Educational Institute (Deemed University), Dayalbagh, Agra*
*[b] Associate Professor r, Dayalbagh Educational Institute (Deemed University), Dayalbagh, Agra*
*[a]Email: somtompriyanka123@gmail.com*

**Abstract**

Indian painting is considered to be the form of Indian civilization, while Saura tribal art of Odisha is considered one of the oldest tribal arts of India, which not only represents aesthetics but is also a carrier of deep cultural elements related to society, religion, nature and memory. Saura painting is known as 'Idital' and its background was the wall. The people of Saura tribe believe that Saura art depicts the journey of the soul, the presence of deities, agricultural rituals and the memories of the community. The main identity of these paintings is the symbols, expression of lines and rhythmic structure inherent in the figures.

In contemporary times, many changes are seen in Saura painting. At present, Saura paintings are being done on canvas, paper, cloth and other colors leaving natural colors. Along with contemporary traditional subjects, contemporary issues are also being depicted. The growing international interest in this art has established it as ethnic art, due to which it is also being honored on the global platform.

However, due to the commercialization of this art, some challenges have also arisen such as lack of originality, superficial use of symbols and distance from traditional emotions. This research paper deeply discusses the historical background and global perspective of Saura art.

भारत की चित्रकला को भारतीय सभ्यता का स्वरुप माना जाता है वही ओडिशा की सौरा जनजातिय कला भारत की प्राचीनतम जनजातीय कलाओं में मानी जाती है जो न केवल सौंदर्य शास्त्र का प्रतिनिधित्व करती है अथवा समाज, धर्म, प्रकृति और स्मृति से जुडे गहन सांस्कृतिक तत्वो का वाहक भी है। सौरा चित्रण को 'इदताल' के नाम से जाना जाता है और इसकी पृष्ठभूमि दिवार होती थी। सौरा जनजाति के लोगो का ऐसा मानना है कि सौराकला में आत्मा की यात्रा, देवी-देवताओं की उपस्थिति, कृषि अनुष्ठान और समुदाय की स्मृतियां अंकित होती थी। इन चित्रो की प्रमुख पहचान इनसे प्रती बनाये गई प्रतीकों, रेखाओं की अभिव्यक्ति तथा आकृति में निहित लयात्मक संरचना है।

समकालीन समय में सौरा चित्रकला में कई परिवर्तन देखने को मिलते है। वर्तमान समय में सौरा चित्रण केनवास, पेपर, कपडा तथा प्राकृतिक रंग छोडकर अन्य रंगो का प्रयोग होने लगा है। समकालीन पारंपरिक विषयो के साथ-साथ समकालीन मुछे भी चित्रित होने लगे है। इस कला के प्रति बढती अंर्तराष्ट्रीय रुचि ने इसे आदिवासी कला (एथनिक आर्ट) के रुप में प्रतिष्ठत किया है जिससे यह वैश्विक मंच पर भी सम्मानित हो रही है।

हालांकि इस कला की बजारीकरण के कारण कुछ चुनौतियां भी उत्पन्न हुई है जैसे मौलिकता की कमी, प्रतीकों का ऊपरी उपयोग, और पारम्परिक भावो से दूरी। इस शोधपत्र में सौरा कला की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, वैश्विक दृष्टिकोण पर गहराई से विर्मश किया गया है।

***Keywords:*** Saura art, Odisha, Tribal art, Traditional art, Globalization, Commercialization.

सौरा कला, ओडिशा, जनजातीय कला, पारम्परिक कला, वैश्वीकरण, बजारीकरण.

------------------------------------------------------------------------

*Received: 8/4/2025*
*Published: 8/31/2025*

------------------------------------------------------------------------

* Corresponding author.

## **Intro- परिचय-**

जनजातीय कला भारतीय संस्कृति की अमूल्य धरोहर है। भारत की विभिन्न जनजातीयों में से ओडिशा की एक जनजाति सौरा जनजाति है जो अपनी कला के प्रसिद्ध है। सौरा जनजाति समुदाय ओडिशा के गउपति, कोरापुट, रायगढा और कंधमाल जिलो में निवास करता है। सौरा चित्रकला की इकोन या इदिताल से सम्बोधित किया जाता है। जिसको सौरा जनजाति के लोग दिवारो पर धार्मिक, सामाजिक और स्मृति- आधारित अवसरो पर बनायी जाती है। यह पारम्परिक कला ऐसे समुदायों द्वारा सृजित की जाती है जो भले ही औपचारिक रुप से शिक्षा से वंचित हों किंतु सांस्कृतिक दृष्टि से अत्यन्त समृद्ध और परिपक्त है। वर्तमान समय में जब वैश्विक कला बाजार और डिजिटलीकरण का प्रभाव हर क्षेत्र में देखा जा रहा है, वही सौरा जनजातीय कला भी समकालीन बदलावों के साथ नए रुप में प्रस्तुत हो रही है।

*Figure no -1 Saura tribe, Odisha*

## **सौरा चित्रकला की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि-**

सौरा जनजातीय चित्रकला की नीव उनकी आध्यात्मिक आस्थाओं, मृतपूर्वजो की आराधना, वंशज स्मृति और प्रकृति से अंतसम्बन्धो में समाहित है। परम्परागत रुप से ये चित्र आवास की भीतरी दीवारों पर मिट्टी, कोयला, चावलका चूर्ण, तथा पौधो से तैयार रंग से बनाया जाता था। इन चित्रो का प्रयोजन केवल सौंदर्यबोध की अभिव्यक्ति न होकर धार्मिक अनुष्ठानो एवं समाजिक संरचना की प्रतीकात्मक प्रस्तुति भी होता था।

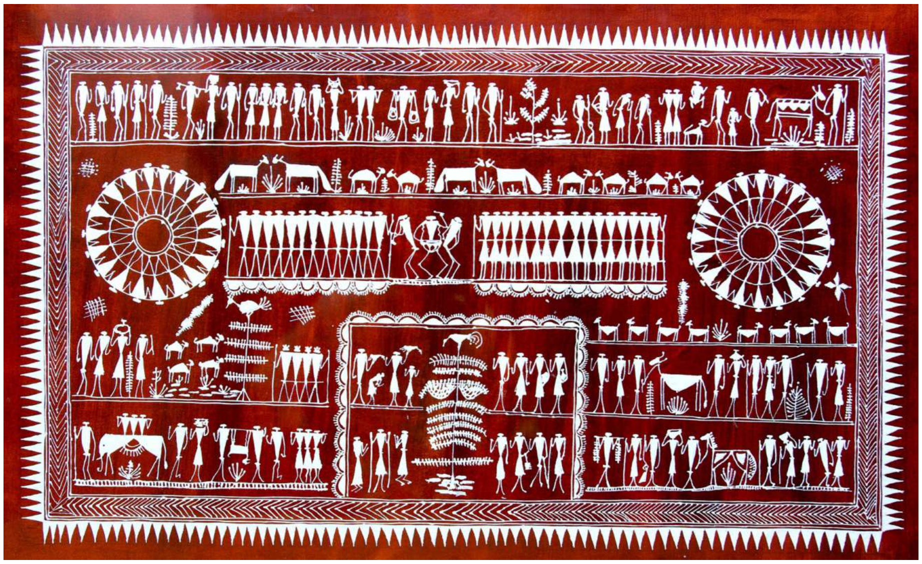

Figure no-2 Saura tribal art painting(odisha tribal museum .bhubaneswar.odisha.india)

- **<u>सौरा चित्रण की बिषय वस्तु-</u>**

प्रत्येक सौरा चित्रकृति किसी न किसी सांस्कृतिक या धार्मिक प्रसंग की प्रतिविंवित करती है- जैसे इदिताल के माध्यम से आत्मा की मृत्यु के उपरान्त यात्रा, कृषि जीवनचक्र, वर्षा का याचना, तथा पूर्वजो की स्मृति का दृश्यात्मक निरुपण सौरा चित्रों में हमे उन आदिय मान्यताओं और निधकीय कथाओं की झलक मिलती है सौरा चित्रों में मानव आकृतिओं लाठी सुदा होती है। ज्यादातर चित्र ज्यामितीय आकार के होते है जिसमें बृक्ष, सूर्य, चॉद, पशु, पक्षी, पर्व व अनुश्ठान की चित्रों में स्थान पाते है। ये प्रतीक सौरा जीवन शैली और विश्व दृश्टिकोण का जीवंत प्रतिविंव है।

के.सी. निशोंको नामक प्रसिद्ध मानव विज्ञानी ने अपने अनुभव और सौरा पर आधारित व्याख्या को Council Of Analytical Tribal Studies (COATS) में प्रकाशित किया। इनके दृष्टिकोण के अनुसार- "साधारण रूप में सौरा निति चित्रकला के अर्थ व उसके स्पष्टीकरण को जनजातियों के सामाजिक, आर्थिक व धार्मिक जीवन के द्वारा समझा जा सकता है तथा गहन अध्ययन के लिए सौरा जनजाति के भित्ति-चित्रों की विषय-वस्तु को समझना चाहिए जो कि पूर्णतया गुफा चित्र व प्रागैतिहासिक कला पर आधारित है।"आदिम मनुष्य के चित्रों की प्रमुख विषय-वस्तु आखेट ही रही है। उसने बारहसिंघा, महिष, हाथी, घोड़ा, सूअर, गैंडा, भालू, हिरन, बैल, गाय, चीता, भेसे, जिराफ जैसे पशुओं को शिकार करते हुए चित्रित किया है जिसका विकसित रूप हमें भारत के ओडिशा राज्य की जनजातियों के भिति चित्रण में देखने को मिलता है जिसमें प्रमुख जनजाति "सौरा" है। सौरा आदिवासी idital के द्वारा अपनी भिति चित्रण परम्परा को तो व्यक्त करते ही हैं परन्तु साथ ही यह idital कुछ संदेश भी देते हैं जिसका सौरा आदिवासियों के जीवन, धार्मिक कर्म-काण्ड आदि में महत्वपूर्ण स्थान माना जाता है।

इस दृष्टि से प्रत्येक idital कोई संदेश व्यक्त करता है लेकिन संदेश को भलि-भांति शयद ही सौरा iditalmar/ kudammar(boi) के विवरण के बिना स्पष्ट किया जा सकता है। प्रत्येक idital अलग-अलग तरीकों से समझे जा सकते हैं जो कि उस जगह पर निर्भर करता है जहाँ वह idital बनाया जा रहा है। प्रत्येक idital एक दर्शक के लिए शानदार प्रतीत हो सकता है जो एक कहानी बताता है लेकिन सौरा आदिवासियों में यह सब सामान्य है। सौरा भिति-चित्रों की विषय-वस्तु को हम निम्न भागों में विभाजित कर सकते हैं। एलविन (1951) ने सौरा जनजाति के चित्रों की विषय-वस्तु को सात भागों में विभाजित किया है जो इस प्रकार है-

1- Icons designed to promote or preserve the fertility of the crop (फसल को बढ़ावा देने या फसल की उर्वरा शक्ति का संरक्षण करने के लिए बनाय गया प्रतीक चिन्ह)

2- Icons dedicated to avert disease (बीमारी से बचने के लिए समर्पित प्रतीक चिन्ह)

3- Icons made to assist easy child birth (सरल शिशु जन्म की सहायता के लिए बनाया गया प्रतीक चिन्ह)

4- Icons made in honour of tutelary (संरक्षणकर्ता के सम्मान में बनाया गया प्रतीक चिन्ह)

5- Icons made in honour of the dead (मृतक के सम्मान में बनाया गया प्रतीक चिन्ह)

6- Icons made for those who have gone abroad (विदेश (असम के चाय बागान) चले गये लोगों के सम्मान में बनाया गया प्रतीक चिन्ह)

7-Icons representing hills and shrines (पहाड़ियों और धार्मिक स्थलों के प्रतिनिधित्व में बनाये गये प्रतीक चिन्ह)

समारोह, त्यौहार एवं आवश्यकता के आधार पर प्रत्येक सौरा मित्ति-चित्र एक दूसरे से भिन्नता रखते हैं। प्रत्येक सौरा देवता और पूर्वजों के अलग-अलग भित्ति चित्र हैं जो कि सौरा आदिवासियों के संसार की संरक्षणता व सार्वभौमिक शांति के लिए समर्पित हैं। ऐसे बहुत से समारोह व त्यौहार हैं जब ये लोग दीवार पर चित्र बनाते हैं जो इस प्रकार हैं-

1- Iddaisum idital (एक बालिका के बाल कटवाने के दौरान बनाया गया प्रतीक चिन्ह)

2- Atmyuman idital (एक बालक के बाल कटवाने के दौरान बनाया गया प्रतीक चिन्ह)

3- Karya idital (पिता के अंतिम संस्कार के समय पूर्वजों को आमंत्रित करने के लिए बनाया गया प्रतीक चिन्ह)

4- Fugusinghpur idital (कृषि के समय बनाया गया प्रतीक चिन्ह)

5- Baru idital (शिकार के लिए बनाया गया भित्ति चित्र)

6- Madumasum idital (महिला पुरोहित की मृत्यु के दौरान बनाया गया प्रतीक चिन्ह)

7- Illdasum idital (बालक द्वारा पुरोहित कला का अध्ययन करने के समय दीवार पर बनाया गया भित्ति चित्र) आदि।

**धार्मिक जीवन**

सौरा जनजाति के धर्म को समझने के लिए सौरा जनजाति प्रचलित मुख्य के पत्रों के नाम स्पष्ट रूप से ध्यान में रखना बहुत ही आवश्यक है। सौरा देवी-देवताओ की गिनती करना या सूची बनाना बहुत ही कठिन है क्योंकि उनकी विविधता बहुत अधिक है सौरा जनजाति के हर क्षेत्र, हर गाँव का अपना एक विशेष पंथ होता है तथा एक ही देवता को भिन्न भिन्न नामों से जाना जाता है। कभी- कभी ऐसा भी देखा गया है कि एक देवता एक क्षेत्र के लिए बहुत महत्वपूर्ण देवता है। वही उसको दूसरे में लगभग अज्ञात हो सकता है।

Figure no-3 Saura tribal art painting(odisha tribal museum .bhubaneswar.odisha.india)

सौरा जनजाति में देवता जनियासुम को महत्वपूर्ण देवता माना जाता है। " सीतपति जाहिर तौर पर अपने पिता राममूर्ति का अनुसरण करते हुए. सौरा देवता को कम से कम इक्कीस देवताओं और आत्माओं आदेश था वर्ग में विभाजित करते हैं। सौरा

जनजाति, में विभिन्न देवी देवता है जिनमें से प्रत्येक का अपना नाम और गुण है। इनमें से कुछ अलग- अलग आकाश देवता है और अन्य सीमित पंथ के स्थानीय देवता है। कुछ को यह मानव त्रासदी और दर्द के दुष्ट है कई लोग इनको 'देवता के बजाय राक्षस या रोष कहलाने के हकदार है लेकिन सौरा जनजाति के लोग 'दयालु और सबसे दुष्ट आत्माओदोनों को एक ही नाम से वर्णित करते हैं।

सौरा जनजाति में किट्टुंगसुम नामका देबूखा 'एक सामुहिक देवता है जो एक व्यापक और महत्वपूर्ण पंथ का उद्देश है किट्टुंग की कल्पना अन्य देवताओं की तुलना में अधिक विस्तार में और अधिक मानवीय सबदों में की जाती है, और एक प्राणी आमतौर पर केवल किट्टुंग कहा जाता है, अधिकांश मिथकों का नायक है जहाँ उसको दुनिया के निर्माता और मानव संस्थाओं के लेखक के रूप में दिखाई देता है।

सौरा जनजाति मे कुछ हो देवता होते है जिनकी पुजा नियमित रूप से कि जाती है। और कुछ ही देवता के मंदिर व प्रतीक बनाए गये हैं। लेकिन ऐसा माना जाता है कि आत्माओ बड़ा समूह सौरा जनजाति के असितत्व को घेरता है और अक्सर आक्रमण करता है।देवता एक महान पर्यटक है. और एक चिज सौरा ओझा (रामन) के काम को बहुत ही जटिल बना देती वह बात यह है कि की उसे कभी नहीं पता होता कि किस देवता को किस समय कहाँ पाया जा सकता है। कुछ देवता के पास घर होते हैं कुछ आकाश में कुछ धरती पर कुछ पाताल लोक मे पाए जाते है सूर्य देवता जिनको सौरा लोग उयुगकुम लंकासुम बोले है वह शोभाभिक रूप से आकाश में स्थित है। तथा इन को ऊपर रहेने वाले देवता के रूप में चित्रित किया जाता है।

" आकाश में किटुग रहते है । वे आकार में खाना खाते पकाते है। उनके चुल्हे की रोशनी आग सूरज की रोशनी है। ठंड होन पर वह खुद को गर्म करते है। जब वह शो जाते है और आग बुझ जाती है तो रात आ जाती है। आकाश में चन्द्रमा मे चंद्रमा भी है जो सूर्य की पत्नी है जिसे अंगाई बोई के नाम से पूजा जाता है और उसके बच्चे तारे और ग्रह है। हवा के देवता, रिंगेसम को अपना प्राकृतिक निवास नहीं मिलता है और बारिश की देवी गनुरवाई और इंद्रधनुष इलिंगबोगसूम भी यह रहते हैं।

इसमें कोई संदेह नहीं है कि सूर्य को सभी देव में से सबसे ऊँचा स्थान प्राप्त है। सौरा लोग मानते है कि उयुगसुम के रूप में सूर्य देवता गर्भ धारण करवाता है और गर्दै - जगबोई के रूप में वह गर्भ में पल रहे बच्चे की हड्डियो को बनाता है और कुछ हद तक उसका छोटी आत्माओ पर नियंत्रण है और कभी-कभी अन्य देवताओ को बली भी दि जाती है|

**<u>सौरा चित्र संयोजन-</u>**

सौरा चित्रकला का मूल उद्‌देश्य केवल सौंदर्य प्रदर्शन नही है वल्कि यह उनके जीवन-दर्शन, आस्था अनुष्ठान और परम्पराओं को व्यक्तकरने का माध्यम भी है। इसलिये इसमें चित्र संयोजन एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।
चित्रों की रचना में वस्तुओं, प्रतीकों, मानव आकृतियों, जीव-जन्तुओं और प्राकृतिक तत्वो का ऐसा संयोजन किया जाता है जो एक गूढ अर्थ और भावात्मक गहराई को प्रकट करता है। इन चित्रों में प्रयुक्त चित्र संयोजन एक विशेष विद्‌या है जो हर रेखा, आकृति रंग और रुप में एक उद्‌देश्य और भाव का संचार करती है। सौरा चित्रकला की विशिष्टता उसकी रेखात्मक संरचना में निहित है जहाॅ प्रत्येक रुप रेखाओं के माध्यम से निर्मित होता है और उन्ही रेखाओं में एक अंतर्निहित लयात्मकता स्पष्ट रुप से अनुभव की जा सकती है।

सौरा चित्रकला में प्रयुक्त विभिन्न ज्यामितीय आकृतियां गहन प्रतीकात्मक अर्थो को प्रेषित करती है वृत्त, जीवनचक्र की निरंतरता और पुर्नजन्म की अवधारणा का प्रतिनिधित्व करता है। त्रिभुज विशेषकर शीर्ष की ओर संकेत करता हुआ स्थायित्व शक्ति एवं दिव्यता का प्रतीक माना जाता है इसका उपयोग प्रायः देवी-देवताओं की उपस्थिति को दर्शाने हेतु किया जाता है वर्ग एक सुव्यवस्थति समरुप संरचना के रुप में दैनिक जीवन की स्थिरता, संतुलन और सामाजिक संरचना के स्थायित्व का संकेत करता है।

सौरा चित्रकला में केन्द्रबिन्दु की संरचना अत्यन्त अर्थपूर्ण होती है चित्र का केन्द्रीय भाग सदैव सर्वाधिक महत्वपूर्ण विषय को दर्शाता है जैसे- आत्मा, देवता अथवा विवाह मंडप आदि।

इनके चारो ओर जीवन की अन्य गतियां- भोजना की गंध, संगीत की गूँज और दर्शकों की निगाहें- ध्यानपूर्वक रचीजाती है। यह रचना केवल चित्र नही एक दृष्टिकोण की अनुशासित प्रस्तुति है।

**<u>सौरा कला में समकालीन परिवर्तन एवं नवीन प्रवृत्तियाॅ-</u>**

विगत कुछ दशको में सौरा जनजाति कला में उल्लेखनीय परिवर्तन दृष्टिगोचर हुए है। जहाॅ कला पहले परम्परागत रुप से केवल धार्मिक अनुष्ठानो, पूर्वज स्मरण, और आत्यिक अनुष्ठानो के अन्र्तगत घरो की भीतरी दीवारो तक सीमित था, वही अब यह अपनी भौगोलिक और सामाजिक सीमाओं को लांघते हुये व्यापक बाजार में स्थान बनाने लगी है।

बढती बाजार-उन्मुख मॉग और शहरी कला प्रेमीयों की रुचि के कारण आज सौरा कलाकार पारम्परिक दीवारो के स्थान पर कैनवाक, कागज, वस्त्र, लकडी, मिट्टी और अन्य हस्तशिल्प उत्पादो पर अपनी चित्रकला की स्थायित्व और संग्रहणीयता को बढाया है, बल्कि आर्थिक अजीविका के नए अवसर भी प्रदान करता है।

समकालीन सौरा कलाकार अब केवल पारम्परिक वनस्पति रंगो तक सीमित नही है बल्कि वे सेक्रेलिक, केब्रिक पोस्टर और स्थानीय रंगो जैसे आधुनिक साधनो से थी अपनी कला को आलोकित कर रहे है, जिससे उनके चित्रों में रंगो की चिरस्थापिता और सौंदर्य की नवीन छविया उभर रही है।

Figure no-4saura painting onsilk sarees and T-shirts

**<u>प्रस्तुति के माध्यम से आया परिवर्तन-</u>**

अब सौरा चित्रकला का प्रदर्शन केवल धार्मिक आयोंजन तक सीमित न होकर कला दीर्घाओं (गैलरी) राष्ट्रीय, अर्न्तराष्ट्रीय प्रदर्शनियॉ, संग्रहालयों, आर्ट फेस्टिलों और आनलाइन प्लेटफार्मो तक विस्तारित हो चुका है। अनेक कलाकार डिजिटल माध्यमों सोशल मीडिया, और ई-कॉमर्स साइडस के माध्यम से अपने चित्रो की वैश्विक दर्शको तक पंहॅचा रहे है।

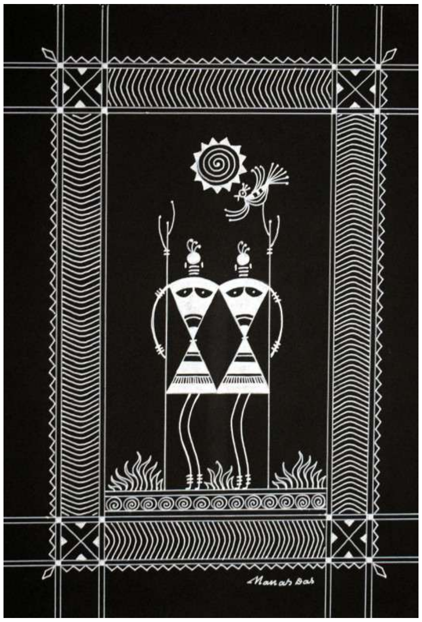

Figure – 5 Saura painting by Mannas Das Medium-Acrylic on paper,2018 art of the earth gallry, new delhi

**<u>परिवर्तन के प्रभाव-</u>**

सौरा कलाकारो को अब केवल स्थानीय बाजार तक सीमित नही रहना पडता, बल्कि उन्हे राष्ट्रीय और वैश्विक स्तर तक भी पहचान ओर व्यापारिक अवसर प्राप्त हो रहे है। यह आर्थिक दृष्टि से उनके लिये सशक्तीकरण का माध्यम बन गया है। साथ

ही परम्पराओं की जडो को संजोते हुये समकालीन बिषयों का समावेश सौरा संस्कृति को न केवल जीवंत बनाए रखता है बल्कि उसे समयानुकूल भी बनाता है। अनेक कलाकार अपनी चित्रकला के माध्यम से समाज में चेतना और जागरुकता उतपन्न कर रहे है। यह कला केवल सौंदर्य का साधन न रहकर सामाजिक संवाद का सशक्त माध्यम बन चुकी है। यह समग्र प्रक्रिया सौरा समुदाय की संस्कृति पहचान को मजबूती प्रदान करती है और साथ ही रचनात्मक प्रयोगो को भी प्रोत्साहित करती है।

**<u>वैश्विक दृष्टिकोण और पहचान-</u>**

सौरा चित्रकला जो ओडिशा की एक प्राचीन जनजातीय परम्परा से उपजी है, अब सीमित स्थानीयता से बाहर निकलकर वैश्विक मंच 'एथनिक आर्ट' (Ethnic Art) के रुप में अपनी अलग पहचान बना चुकी है। यह एक अदभुत सांस्कृतिक यात्रा है जिसमें परस्पर, प्रतीकात्मकता और आधुनिक प्रस्तुति का सुन्दर संगम दिखाई देता हैं आज यह चित्रकला न केवल भारत में अपितु फ्रांस, जर्मनी, जापान, आस्ट्रेलिया, अमेरिका, इंग्लैड जैसे देशो की दीर्घाओं और अर्न्तराष्ट्रीय कला मेले में प्रदर्शित की जा रही है यह वैश्विक पहचान इस बात का प्रमाण है कि कैसे एक ग्रामीण, सांस्कृतिक अभिव्यक्ति समुचे विश्व में एक प्रभावसाली दृश्य भाषा के रुप में उभर सकती है।

सौरा चित्रकला की वैश्विक पहचान बनने की शुरुवात अर्न्तराष्ट्रीय प्रर्दशनियों में इसकी उपस्थिति से हुई फ्रांस के Mussee du qual Brarly जैसे प्रतिष्ठित संग्रहालयों में भारतीय जनजातीय कलाओं की प्रदर्शनी में सौरा कला को प्रमुखता से शामिल किया गया। जर्मनी के बर्लिन, जापान के टोक्यो और आस्ट्रेलिया के मेलबर्न जैसे कला केन्द्रो में भी यह चित्रकला प्रदर्शित की गई। इन प्रदर्शनियों ने न केवल सौरा कला को विदेशी दर्शको से परिचित कराया बल्कि इसे एक बायो-कलचरल नेरेटिव के रुप में प्रस्तुत किया जिसमें प्रकृति समुदाय और आत्मा के बीच के सम्बन्धो को चित्रात्मक भाषा में प्रेषित किया जाता है।

सौरा चित्रकला को वैश्विक पहचान दिलाने में युनेस्को (Unesco) जैसे संगठनो की भी महत्वपूर्ण भूमिका रही है युनेस्को द्वारा 'Intangible Cultural Heritage' की सूची में शामिल होने की प्रक्रिया में कई भारतीय जनजातीय कलाओं को संरक्षण मिला है जिनमें सौरा चित्रकला भी प्रमुख रही है। इसके अतिरिक्त अंतरराष्ट्रीय गैर सरकारी संस्थाए जैसे 'Cultural Survival Indigenous Art Foundation'और 'Global Heritage Fund' ने सौरा कलाकारों को मंच प्रदान किया और उनकी कलात्मकता को संक्षित एवं पचारित करने में सहायता की।

**<u>डिजिटल प्लेटफार्म और वैश्विक पहुँच</u>**

प्रगति और डिजिटल माध्यमो ने सौरा चित्रकला को विश्व स्तर पर पहुँचाने में क्रांतिकारी भूमिका निभाई है। आज Instagram, Pinterest, Youtube और Facebook जैसे सोशल मीडिया पर सौरा कलाकारो के चित्र वायरल हो रहे है। कलाकार अब

ऑनलाइन कार्यशालाए (Online Warkshops) आयोजित कर रहे है। जिससे अंतर्राष्ट्रीय दर्शक इस पारम्परिक कला को न केवल देख पा रहे है बल्कि उससे जुड भी पा रहे है। कुछ कलाकारो ने NFT (Non-Fungible Token) के माध्यम से सौरा चित्रो को डिजिटल कलाकृतियों में बदला है, जिससे यह कला बाजार में भी प्रवेश कर चुकी है।

आज सौरा चित्रकला केवल एक सांस्कृतिक धरोहर नही बल्कि एक वैश्विक व्यापारिक वस्तु भी बन गई है। अर्न्तराष्ट्रीय कला संग्राहलो (Art Callectors) और गैलरी संचालको की इस कला में गहरी रुची देखी जा रही है। लंदन, न्यूयार्क और पेरिस की नीलामी मंडियों में सौरा चित्रो की विक्री बढी है। इसे खरीदारों द्वारा दीवार सज्जा (Wall Decar) पर्यावरण अनुकूल डिजाइन और प्रमाणिकता के रुप में देखा जाता है।

**संस्थागत सर्मथन और प्रशिक्षण-**

कुछ प्रमुख अर्न्तराष्ट्रीय संस्थाए जैसे 'Earthwatch Institw Art far Change India' और 'Asia Society ने सौरा चित्रकला पर कार्यशालाए आयोजित की इसके अतिरिक्त विश्वविद्यालय स्तर पर जैसे आक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी, हार्वाड, टोक्यों यूनिवर्सिटी- भारतीय जनजातीय कलाओं का शोध प्रबन्धो और प्रदर्शनों में सौरा कला को विशिष्ट स्थान दिया है। इससे न केवल इसकी शैक्षणिक महता बढी है बल्कि इसके संरक्षण को भी वैचारिक आधार मिला है।

**चुनौतिया-**

वैश्विक मंच पर पहुंचना जितना गौरव का बिषय है उतनी ही यह चुनौतियॉ भी लेकर आता है कई बार पारम्परिक कलाकारों के कार्य को बिना अनुमति के कॉपी कर लिया जाता है जिससे उनकी मौलिकता और आर्थिक अधिकारों का उलग्घन होता है। इसके लिये अर्न्तराष्ट्रीय कॉपीराइट कानून और GI टैग (Geographical Indication) जैसे उपयोगो की आवश्यकता है। साथ ही यह सुनिश्चित करना आवश्यक है कि वैश्विक मॉग के कारण इस कला का व्यवसायीकरण उसकी सांस्कृतिक आस्था को नुकसान न पहुंचाए।

**Bibliography**

1. Kejriwal, H.K, Arts of the Earth – Folk and Tribal Art, Museum.Karnataka, Chitrakala Parishath, Bangalore, 2003.
2. Mahapatra, S.K., Tribal wall Painting of Orissa, Bhubhaneshwar, 1991.
3. Nishonko, K.C., Art of Saora: Idital Annual Report of Center for Analytical Research and Training Center , Koraput, 2008

**INTERNET WEBSITES**

- Wda.co.in/saura-paimting-tribalart-oforissa/

- https://eksparsh:wordpress.com/2010/05/30/saurapaintings/
- https://mamtavn.wordpress.com/2011/12/06/tribal-art-of-India/
- India4you.com/srcm_saura-painting.php
- Mathu-art-adventure-blogspot.com/2008/08/saura-painting.orissa.html
- En.wikipedia.org/wiki/tribals
- https://www.google.com/search?q=saura+tribal+painting&client
- www.artculturefestival.in